KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJAHS/ APR-JUN (2018)/VOL-5/ISS-2/A1 PAGE NO. 1-3
ISSN: 2348- 4349 IMPACT FACTOR (2018) – 8.0121
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

भारत में हिन्दी भाषा का यथार्थ

[1]डॉ0 जय प्रकाश पटेल

[1]64ए, बी0एच0एस0 अल्लापुर, इलाहाबाद, उ0प्र0

[2]अंजू सिंह पटेल

[2]शोधछात्रा, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

सारांश

भारत विविधता का देश है। यहां कई भाषा प्रचलन में है। इसमें हिन्दी भाषा बोलने, पढ़ने एवं लिखने वाले व्यक्तियों की संख्या सर्वाधिक है। भारत के किसी कोने में चले जाइए हिन्दी समझने वाले नागरिक अवश्य मिल जायेगें। इसके बावजूद वर्तमान सदी में हिन्दी के प्रति उपेक्षा का व्यवहार समझ से परे है। कुछ अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में हिन्दी बोलने पर छात्रों को आर्थिक दण्ड सहना पड़ता है। कुछ व्यक्ति सार्वजनिक स्थानों पर अंग्रेजी के कुछ शब्द बोलकर स्वयं में गर्व महसूस करते हैं जबकि बहुसंख्यक नागरिक उनके शब्दों के उपयुक्त अर्थ समझ नहीं पाते हैं। सच तो यह है कि हम हिन्दी भाषा को छोड़कर सामान्य भारतीय जनमानस से जुड़ नहीं सकते हैं। हिन्दी भाषा हमारे आस्था का विषय है। हम अन्यत्र भाषा के सहारे भौतिक विकास कर सकते हैं परन्तु हृदयगत शक्ति मातृभाषा में मिलती है। इसी कारण हमारे देश के उच्च दार्शनिक, वैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय, राजनीतिक नेता एवं भाषा वैज्ञानिकों ने एक साथ मिलकर हिन्दी भाषा का समर्थन किया है। स्वयं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिन्दी भाषा को भारतीय स्वतंत्रता की भाषा माना है। अतः हम भारतीय का कर्त्तव्य है कि हिन्दी भाषा में गुणात्मक एवं संख्यात्मक वृद्धि का प्रयास करना चाहिए।

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org